रामायण जी की आरती (Ramayan Ji Ki Aarti)

रामायण जी की आरती (Ramayan Ji Ki Aarti)
आरती श्री रामायण जी की,
कीरतत कलित िलित लिय पी की !!
गावत ब्रहमादिक मुति िारि,
बाल्मीकक बबग्याि बबिारि,
शुक ििकादिक शेष अरु शारि,
बरति पविित कीरतत िीकी,
आरती श्री रामायण जी की…!!
गावत बेि पुराि अष्टिि,
छओं शास्त्र िब ग्रंथि को रि,
मुति जि धि िंतािि को िरबि,
िार अंश िम्मत िब ही की,
आरती श्री रामायण जी की…!!
गावत िंतत शंभु भवािी,
अरु घटिंभव मुति बबग्यािी,
ब्यािि आदि कबबबज बखािी,
कागभुशुंडि गरुड़ केही की,
आरती श्री रामायण जी की…!!
कलिमि हरति बबषय रि फीकी,
िुभग लिंगार मुक्तत जुबती की,
िििि रोग भव मूरर अमी की,
तात मातु िब बबधध तुििी की,
आरती श्री रामायण जी की…!!